INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

आयुष्मान भारत के अंतर्गत विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम में जनसहभागिता: उदयपुर जिले का अध्ययन

(Community Participation in the School Health and Wellness Programme under Ayushman Bharat: A Study of Udaipur District)

डॉ. ज्योतिरादित्य सिंह भाटी
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान, भारत)

कला जैन
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान,
भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/08.2026-59812818/IRJHIS2608018

सारांश:

प्रस्तुत अध्ययन में आयुष्मान भारत के अंतर्गत संचालित विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम में जनसहभागिता की स्थिति का उदयपुर जिले के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। अध्ययन का दृष्टिकोण राजनीति विज्ञान में लोकनीति एवं सहभागी शासन की अवधारणा से संबद्ध है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत 80 अभिभावकों एवं 200 विद्यार्थियों से प्राप्त दत्तों का आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि कार्यक्रम के प्रति अभिभावकों एवं विद्यार्थियों की धारणा सामान्यतः सकारात्मक है। विद्यार्थियों में स्वास्थ्य जागरूकता, स्वच्छता, जीवन-कौशल तथा कार्यक्रम की उपयोगिता के प्रति अनुकूल अभिमत पाया गया। अभिभावकों ने भी कार्यक्रम के स्वास्थ्य एवं व्यवहारगत प्रभाव को स्वीकार किया, जबकि उनकी प्रत्यक्ष सहभागिता को और सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता सामने आई। अध्ययन से निष्कर्षित होता है कि विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य संवर्धन के साथ-साथ विद्यालय–परिवार सहभागिता को बढ़ावा देने वाली महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक नीति पहल है।

प्रमुख शब्द : *आयुष्मान भारत, विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम, जनसहभागिता, लोकनीति, सहभागी शासन, स्वास्थ्य संवर्धन, उदयपुर जिला, राजनीति विज्ञान*

1. शोध की पृष्ठभूमि :

स्वास्थ्य केवल रोगों की अनुपस्थिति तक सीमित अवधारणा नहीं है, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक कल्याण से जुड़ा व्यापक विषय है। बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में विकसित होने वाली स्वास्थ्य संबंधी आदतें आगे के जीवन-व्यवहार को प्रभावित करती हैं। इसी कारण विद्यालय को स्वास्थ्य संवर्धन, रोग-निवारण तथा स्वस्थ जीवन-शैली के विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक संस्थान के रूप में देखा जाता है। भारत की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति ने भी स्वास्थ्य संवर्धन, प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं की सुदृढ़ता तथा लोगों की भागीदारी को स्वास्थ्य व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण आधारों के रूप में रेखांकित किया है (Ministry of Health and Family Welfare

[MoHFW], 2017)।

इसी व्यापक दृष्टिकोण के अंतर्गत भारत सरकार ने आयुष्मान भारत कार्यक्रम में विद्यालय-आधारित स्वास्थ्य संवर्धन को स्थान दिया। आयुष्मान भारत के अंतर्गत School Health Programme के लिए परिचालन दिशानिर्देशों में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, मानसिक स्वास्थ्य, जीवन-कौशल तथा रोग-निवारण संबंधी विषयों पर आयु-उपयुक्त स्वास्थ्य शिक्षा और सहभागितापूर्ण गतिविधियों पर बल दिया गया है (MoHFW, 2018)। कार्यक्रम में प्रत्येक विद्यालय में दो शिक्षकों को Health and Wellness Ambassadors के रूप में प्रशिक्षित करने तथा नियमित स्वास्थ्य संवर्धन गतिविधियाँ संचालित करने की व्यवस्था की गई है।

विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम फरवरी 2020 से सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में लागू किया गया। इसके अंतर्गत स्वास्थ्य एवं कल्याण दूत विद्यार्थियों के साथ साप्ताहिक गतिविधियों के माध्यम से स्वास्थ्य संवर्धन एवं रोग-निवारण संबंधी विषयों पर कार्य करते हैं (National Health Mission [NHM], 2026)। कार्यक्रम की संरचना में अभिभावक-शिक्षक बैठकों तथा अन्य विद्यालयीय गतिविधियों को भी स्थान दिया गया है, जिससे यह पहल केवल विद्यालय के भीतर संचालित गतिविधि न रहकर परिवार एवं समुदाय से जुड़ने वाली सार्वजनिक नीति का रूप ग्रहण करती है।

राजनीति विज्ञान के दृष्टिकोण से किसी सार्वजनिक कार्यक्रम की सफलता केवल उसके निर्माण या प्रशासनिक आदेश से निर्धारित नहीं होती, बल्कि उसके स्थानीय स्तर पर क्रियान्वयन, उत्तरदायित्व तथा नागरिकों की सहभागिता भी महत्त्वपूर्ण होती है। Arnstein (1969) ने नागरिक सहभागिता को निर्णय-प्रक्रिया में नागरिक शक्ति के विभिन्न स्तरों के रूप में समझाया। इस दृष्टि से अभिभावकों और विद्यार्थियों की भागीदारी को केवल कार्यक्रम के लाभार्थी होने तक सीमित न मानकर सार्वजनिक नीति के स्थानीय क्रियान्वयन में उनकी भूमिका के संदर्भ में देखना उपयोगी है।

अतः आयुष्मान भारत के अंतर्गत विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम का अध्ययन लोकनीति, नीति-क्रियान्वयन तथा जनसहभागिता के परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन उदयपुर जिले में कार्यक्रम से जुड़े अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के अभिमत के आधार पर यह समझने का प्रयास करता है कि इस सार्वजनिक पहल में जनसहभागिता की स्थिति कैसी है।

2. शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व :

विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान, सकारात्मक व्यवहार तथा जीवन-कौशल को विकसित करना है। ऐसे कार्यक्रमों का वास्तविक प्रभाव स्थानीय स्तर पर उनके क्रियान्वयन और लक्षित समूह की सहभागिता पर निर्भर करता है। आयुष्मान भारत की परिचालन रूपरेखा भी स्वास्थ्य संवर्धन को विद्यालयी गतिविधियों तथा समुदाय-आधारित जुड़ाव से जोड़ती है (MoHFW, 2018)।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है कि सरकारी योजनाओं के मूल्यांकन में प्रायः प्रशासनिक क्रियान्वयन पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि लाभार्थियों एवं संबंधित सामाजिक समूहों की दृष्टि से कार्यक्रम की स्थिति को समझना समान रूप से आवश्यक है। अभिभावक विद्यालय और परिवार के बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी हैं, जबकि विद्यार्थी कार्यक्रम के प्रत्यक्ष सहभागी हैं। अतः दोनों समूहों के अभिमत कार्यक्रम के स्थानीय क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति को समझने में उपयोगी आधार प्रदान करते हैं।

राजनीति विज्ञान में जनसहभागिता लोकतांत्रिक शासन की महत्त्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है। किसी लोकनीति में नागरिकों की आवाज, सहभागिता और प्रतिक्रिया नीति-क्रियान्वयन को अधिक उत्तरदायी एवं जनोन्मुख बनाने में योगदान दे सकती है। भारतीय संदर्भ में

शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों पर हुए पूर्व अध्ययनों ने भी सामुदायिक सहभागिता को कार्यक्रम के क्रियान्वयन से जोड़कर देखा है (Awasthi & Patel, 2008)।

उदयपुर जिले के संदर्भ में यह अध्ययन इसलिए उपयोगी है क्योंकि यहाँ विद्यालय, परिवार और स्थानीय सामाजिक परिवेश के बीच समन्वय सार्वजनिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन को प्रभावित कर सकता है। अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के अभिमत का व्यवस्थित अध्ययन कार्यक्रम की स्वीकार्यता, सहभागिता तथा क्रियान्वयन से संबंधित वास्तविक पक्षों को सामने लाने में सहायता करेगा।

अध्ययन का महत्त्व तीन स्तरों पर देखा जा सकता है—शैक्षणिक, नीतिगत एवं प्रशासनिक। शैक्षणिक स्तर पर यह लोकनीति और जनसहभागिता के अध्ययन में अनुभवजन्य सामग्री उपलब्ध कराएगा। नीतिगत स्तर पर प्राप्त निष्कर्ष विद्यालय स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों के स्थानीय क्रियान्वयन को समझने में सहायक होंगे। प्रशासनिक स्तर पर यह अभिभावक एवं विद्यार्थी सहभागिता को अधिक प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी संकेत प्रदान कर सकता है।

3. शोध शीर्षक :

"आयुष्मान भारत के अंतर्गत विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम में जनसहभागिता: उदयपुर जिले का अध्ययन"

4. शोध प्रश्न :

1. विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के क्रियान्वयन में जनसहभागिता की स्थिति क्या है?
2. विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के संबंध में अभिभावकों का अभिमत क्या है?
3. विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के संबंध में विद्यार्थियों का अभिमत क्या है?

5. संबंधित साहित्य का अध्ययन :

विद्यालय स्वास्थ्य से संबंधित साहित्य में विद्यालय को बच्चों एवं किशोरों के स्वास्थ्य-संवर्धन तथा निवारक हस्तक्षेपों के लिए महत्त्वपूर्ण संस्थागत मंच माना गया है। Jakasania et al. (2023) ने भारत में विद्यालय स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा करते हुए पाया कि पूर्ववर्ती प्रयासों के बावजूद कार्यक्रमों के क्रियान्वयन, अंतर-विभागीय समन्वय, निगरानी तथा निरंतरता से संबंधित चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसके विपरीत, आयुष्मान भारत के अंतर्गत विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम स्वास्थ्य शिक्षा को नियमित विद्यालयी गतिविधियों से जोड़ते हुए स्वास्थ्य संवर्धन एवं रोग-निवारण को अधिक समग्र रूप में प्रस्तुत करता है (Ministry of Health and Family Welfare [MoHFW], 2018)।

कार्यक्रम की संरचना को देखें तो इसकी विशेषता केवल स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि सहभागितापूर्ण क्रियान्वयन है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अनुसार प्रत्येक विद्यालय में दो शिक्षकों को Health and Wellness Ambassadors के रूप में प्रशिक्षित कर साप्ताहिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ कार्य करने का प्रावधान है। दिशानिर्देशों में विद्यालय, स्वास्थ्य विभाग तथा अन्य हितधारकों की भूमिकाएँ भी निर्धारित की गई हैं।

इस दृष्टि से साहित्य के दो प्रमुख पक्ष सामने आते हैं। पहला, स्वास्थ्य-केन्द्रित दृष्टिकोण, जिसमें विद्यार्थियों के स्वास्थ्य-ज्ञान, व्यवहार और कल्याण पर बल दिया गया है। दूसरा, शासन एवं सहभागिता का दृष्टिकोण, जिसमें कार्यक्रम के स्थानीय क्रियान्वयन में विभिन्न हितधारकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। आयुष्मान भारत की परिचालन रूपरेखा भी अभिभावकों एवं अन्य हितधारकों को विद्यालयीय स्वास्थ्य गतिविधियों से जोड़ने की संभावना प्रस्तुत करती है।

हालाँकि उपलब्ध साहित्य में विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के स्वरूप, क्रियान्वयन की चुनौतियों तथा विद्यार्थियों के स्वास्थ्य संबंधी पक्षों पर पर्याप्त चर्चा मिलती है, लेकिन उदयपुर जिले में आयुष्मान भारत के अंतर्गत विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम में जनसहभागिता को अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के अभिमत के आधार पर समझने वाले अनुभवजन्य अध्ययन की विशिष्टता बनी रहती है। अतः प्रस्तुत अध्ययन पूर्ववर्ती स्वास्थ्य-केंद्रित अध्ययनों से आगे बढ़कर लोकनीति के स्थानीय क्रियान्वयन में जनसहभागिता को केंद्र में रखता है।

6. शोध उद्देश्य :

1. विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के क्रियान्वयन में जनसहभागिता की स्थिति का अध्ययन करना।
2. विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के संबंध में अभिभावकों के अभिमत का अध्ययन करना।
3. विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के संबंध में विद्यार्थियों के अभिमत का अध्ययन करना।

7. शोध विधि, प्रविधि, परिसीमन, न्यादर्श एवं शोध उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा दत्त-संकलन के लिए सर्वेक्षण प्रविधि अपनाई गई है। अध्ययन का क्षेत्र उदयपुर जिले के तीन ब्लॉकों तक सीमित रखा गया है और इसमें केवल आयुष्मान भारत के अंतर्गत संचालित विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन के अभिधारकों के रूप में अभिभावक एवं विद्यार्थी को शामिल किया गया है। कुल 280 अभिधारकों में 80 अभिभावक एवं 200 विद्यार्थी सम्मिलित हैं। अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के अभिमत प्राप्त करने के लिए क्रमशः अभिभावक प्रश्नावली एवं विद्यार्थी प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण आवृत्ति एवं प्रतिशत के आधार पर किया गया तथा निष्कर्षों की व्याख्या शोध उद्देश्यों एवं शोध प्रश्नों के संदर्भ में की गई।

11. दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या :

11.1 अभिभावकों के अभिमत का विश्लेषण एवं व्याख्या :

अध्ययन में सम्मिलित 80 अभिभावकों की प्रतिक्रियाओं से विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के प्रति सामान्यतः सकारात्मक धारणा सामने आई। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता से जुड़े पक्षों में सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ 60.0% से 70.0% के बीच रहीं। कार्यक्रम के प्रभाव के संबंध में 58.8% से 68.8% अभिभावकों ने सकारात्मक मत व्यक्त किया। इससे संकेत मिलता है कि कार्यक्रम का प्रभाव विद्यार्थियों की स्वच्छता, स्वास्थ्य संबंधी आदतों, आत्मविश्वास तथा स्वास्थ्य के प्रति उत्तरदायित्व जैसे पक्षों में अनुभव किया जा रहा है।

जनसहभागिता से जुड़े परिणामों में सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ 52.5% से 62.5% के बीच रहीं। विद्यालयी गतिविधियों में सहयोग को 62.5% तथा बैठकों में सहभागिता को 52.5% अभिभावकों ने स्वीकार किया। कार्यक्रम की जानकारी एवं विद्यालय के साथ संवाद से संबंधित प्रतिक्रियाएँ भी सकारात्मक रहीं। प्रशासनिक भूमिका के संदर्भ में 56.3% से 63.8% अभिभावकों ने विद्यालय प्रशासन की सक्रियता, स्वास्थ्य गतिविधियों तथा कार्यक्रम के संचालन को सकारात्मक माना। इस प्रकार अभिभावकों के स्तर पर कार्यक्रम की उपयोगिता स्पष्ट दिखाई देती है, जबकि प्रत्यक्ष सहभागिता को और व्यापक बनाने की संभावना बनी हुई है।

11.2 विद्यार्थियों के अभिमत का विश्लेषण एवं व्याख्या :

अध्ययन में सम्मिलित 200 विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ कार्यक्रम के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति को दर्शाती हैं। स्वास्थ्य एवं कल्याण सत्रों की गुणवत्ता तथा सहभागिता से संबंधित सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ 62.0% से 68.5% तक रहीं। विद्यार्थियों ने सत्रों को समझने योग्य, रोचक तथा जीवन से जुड़ा माना और शिक्षकों के सहयोग को भी सकारात्मक रूप से स्वीकार किया।

स्वास्थ्य जागरूकता एवं व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र में सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ 59.5% से 65.0% के बीच रहीं। स्वच्छता, स्वस्थ खान-पान, तनाव प्रबंधन, भावनात्मक समझ तथा विद्यालय में प्राप्त जानकारी को घर पर अपनाने से संबंधित प्रतिक्रियाएँ कार्यक्रम के व्यवहारगत प्रभाव की ओर संकेत करती हैं। जीवन कौशल एवं सामाजिक दृष्टिकोण के अंतर्गत नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता 66.0%, लैंगिक समानता 64.0% तथा आत्मविश्वास 63.5% रहा।

कार्यक्रम की उपयोगिता एवं निरंतरता के संबंध में विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक रही। 69.0% विद्यार्थियों ने कार्यक्रम को उपयोगी माना, जबकि 70.5% ने नियमित स्वास्थ्य एवं कल्याण सत्रों की आवश्यकता स्वीकार की और 68.0% ने भविष्य में भी सहभागिता की इच्छा व्यक्त की। इससे कार्यक्रम की विद्यार्थियों के बीच स्वीकार्यता तथा निरंतरता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।

11.3 समेकित विश्लेषण :

अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के परिणामों को एक साथ देखने पर विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। दोनों समूहों ने कार्यक्रम के स्वास्थ्य संबंधी लाभ, उपयोगिता तथा विद्यार्थियों के व्यवहारगत विकास को स्वीकार किया। अभिभावकों की प्रतिक्रियाओं में स्वास्थ्य एवं स्वच्छता तथा कार्यक्रम के प्रभाव का पक्ष प्रमुख रहा, जबकि विद्यार्थियों ने सत्रों की उपयोगिता, स्वास्थ्य व्यवहार, जीवन कौशल तथा कार्यक्रम की निरंतरता को अधिक स्पष्ट रूप से स्वीकार किया।

दोनों समूहों के बीच एक महत्त्वपूर्ण अंतर प्रत्यक्ष सहभागिता के स्तर पर दिखाई देता है। अभिभावकों में कार्यक्रम के लाभ के प्रति सकारात्मकता अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि सहभागिता संबंधी प्रतिक्रियाएँ उससे कुछ कम हैं। दूसरी ओर, विद्यार्थियों में नियमित सत्रों एवं भविष्य की सहभागिता के प्रति सकारात्मक रुझान अधिक स्पष्ट है। इससे संकेत मिलता है कि कार्यक्रम की स्वीकार्यता अच्छी है, लेकिन विद्यालय–अभिभावक संवाद, बैठकों में भागीदारी और समुदाय-आधारित सहभागिता को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

समग्र रूप से उपलब्ध दत्त यह दर्शाते हैं कि विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम उदयपुर जिले में स्वास्थ्य जागरूकता, सकारात्मक व्यवहार, जीवन-कौशल तथा विद्यालय-परिवार सहभागिता को बढ़ावा देने वाली उपयोगी पहल के रूप में कार्य कर रहा है। साथ ही, जनसहभागिता को अधिक सक्रिय एवं सतत बनाने की दिशा में अतिरिक्त प्रयास कार्यक्रम के स्थानीय क्रियान्वयन को और सुदृढ़ कर सकते हैं।

12. प्रमुख निष्कर्ष :

अध्ययन से प्राप्त अभिभावकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर निम्न प्रमुख निष्कर्ष सामने आए—

1. विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम के प्रति अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का दृष्टिकोण सामान्यतः सकारात्मक पाया गया।
2. अभिभावकों के अनुसार कार्यक्रम का विद्यार्थियों की स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी आदतों पर अनुकूल प्रभाव दिखाई देता है। स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी विभिन्न पक्षों में सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ 60.0% से 70.0% के बीच रहीं।
3. कार्यक्रम के कारण विद्यार्थियों के व्यवहार, आत्मविश्वास तथा स्वास्थ्य के प्रति उत्तरदायित्व में सुधार दिखाई दिया। कार्यक्रम के प्रभाव से संबंधित पक्षों में 58.8% से 68.8% अभिभावकों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।
4. अभिभावकों की सहभागिता संतोषजनक किंतु पूर्णतः सक्रिय नहीं पाई गई। विद्यालयी गतिविधियों में सहयोग के प्रति 62.5% तथा बैठकों में सहभागिता के प्रति 52.5% सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। इससे अभिभावक सहभागिता को और व्यापक बनाने की

आवश्यकता स्पष्ट होती है।

5. विद्यार्थियों ने स्वास्थ्य एवं कल्याण सत्रों को समझने योग्य, रोचक तथा उपयोगी माना। विभिन्न सत्रीय पक्षों में 62.0% से 68.5% विद्यार्थियों ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।
6. कार्यक्रम से विद्यार्थियों में स्वास्थ्य जागरूकता एवं व्यवहारगत परिवर्तन के संकेत मिले। स्वच्छता, स्वस्थ खान-पान, भावनात्मक समझ और तनाव प्रबंधन से संबंधित सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ 59.5% से 65.0% के बीच रहीं।
7. कार्यक्रम का प्रभाव स्वास्थ्य विषयों तक सीमित न रहकर जीवन-कौशल एवं सामाजिक दृष्टिकोण तक दिखाई दिया। नशे के दुष्प्रभावों की जानकारी, लैंगिक समानता, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक संबंधों से जुड़े पक्षों में विद्यार्थियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया 60.0% से 66.0% रही।
8. कार्यक्रम की स्वीकार्यता विद्यार्थियों में अधिक स्पष्ट दिखाई दी। 69.0% विद्यार्थियों ने इसे उपयोगी माना, 70.5% ने नियमित सत्रों की आवश्यकता स्वीकार की तथा 68.0% ने भविष्य में भी सहभागिता की इच्छा व्यक्त की।
9. समेकित रूप से दोनों वर्गों के दत्त यह दर्शाते हैं कि कार्यक्रम की उपयोगिता और स्वीकार्यता मजबूत है, जबकि अभिभावकों की प्रत्यक्ष सहभागिता तथा विद्यालय–परिवार संवाद को और सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है।
10. अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि विद्यालय स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम स्वास्थ्य जागरूकता, सकारात्मक व्यवहार तथा विद्यार्थियों के जीवन-कौशल के विकास में उपयोगी सार्वजनिक नीति पहल के रूप में कार्य कर रहा है।

13. सुझाव :

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

1. अभिभावक सहभागिता बढ़ाई जाए तथा स्वास्थ्य एवं कल्याण संबंधी बैठकों को अधिक नियमित एवं संवादात्मक बनाया जाए।
2. विद्यालयों द्वारा कार्यक्रम से संबंधित सूचना अभिभावकों तक सरल एवं नियमित माध्यमों से पहुँचाई जाए।
3. विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य सत्रों में व्यावहारिक एवं सहभागितापरक गतिविधियों का अधिक प्रयोग किया जाए।
4. स्वास्थ्य एवं कल्याण सत्रों में सीखी गई बातों को घर तथा दैनिक जीवन में लागू करने के लिए विद्यालय–परिवार समन्वय विकसित किया जाए।
5. Health and Wellness Ambassadors के लिए समय-समय पर क्षमता-विकास एवं पुनःप्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए।
6. कार्यक्रम के क्रियान्वयन की नियमित अनुश्रवण एवं समीक्षा की जाए, विशेषकर उन विद्यालयों में जहाँ सहभागिता अथवा संसाधनों की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है।
7. विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम को स्थानीय समुदाय एवं उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़कर सहभागी क्रियान्वयन को अधिक प्रभावी बनाया जाए। यह सुझाव कार्यक्रम की मूल परिचालन संरचना से भी संगत है, जिसमें अभिभावक-शिक्षक बैठकें, Health and Wellness Ambassadors तथा स्वास्थ्य सेवाओं से referral linkages का प्रावधान किया गया है।

14. संदर्भ सूची :

1. Awasthi, K., & Patel, R. C. (2008). Perception of community members regarding SSA and its implementation. *Journal of Indian Education, 34*(3), 41–62. (NCERT Journals)

2. Arnstein, S. R. (1969). A ladder of citizen participation. *Journal of the American Institute of Planners, 35*(4), 216–224. https://doi.org/10.1080/01944366908977225 (American Planning Association)
3. Jain, N., Bahl, D., Mehta, R., Bassi, S., Sharma, K., & Arora, M. (2022). Progress and challenges in implementing adolescent and school health programmes in India: A rapid review. *BMJ Open, 12*(5), e047435. https://doi.org/10.1136/bmjopen-2020-047435 (PubMed)
4. Jakasania, A., Lahariya, C., Pandya, C., Raut, A. V., Sharma, R., K., S., Mundra, A., Kapoor, J. P., Khajuria, S., & Gupta, S. S. (2023). School health services in India: Status, challenges and the way forward. *Indian Journal of Pediatrics, 90*(Suppl. 1), 116–124. https://doi.org/10.1007/s12098-023-04852-x (PubMed)
5. Kumar, H., & Verma, M. K. (2024). Status of school health promotion activities at the middle stage under the Ayushman Bharat Programme in DoE schools of Delhi. *Educational Administration: Theory and Practice, 30*(7), 1529–1547. https://doi.org/10.53555/kuey.v30i7.11451 (Kuey)
6. Malik, C. S. (2018). From community participation to community engagement: The call for school leadership in the Indian context. *Journal of Indian Education, 44*(1), 158–172. (NCERT Journals)
7. Ministry of Health and Family Welfare. (2017). *National health policy 2017*. Government of India. (Ministry of Health and Family Welfare)
8. Ministry of Health and Family Welfare. (2018). *Operational guidelines on school health programme under Ayushman Bharat*. Government of India. (National Museum of Natural History)
9. National Health Mission. (2026). *School Health & Wellness Programme*. Ministry of Health and Family Welfare, Government of India. (National Museum of Natural History)